REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

"वैचारिक तथा व्यावसायिक पत्रकारिता"

प्रा. जमादार आर. एल.
हिन्दी विभाग प्रमुख , असोसिएट प्रोफेसर , यु. ई. एस. महिला महाविद्यालय, सोलापुर ।

● **सारांश :-**

समय और समाज के सन्दर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्वबोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं । समाजहित में सम्यक प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है । श्री. रामकृष्ण खाडिलकर ने पत्र-कला और पत्रकार कला इन दो शब्दों का प्रयोग किया है । उनके अनुसार ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूम में दूसरों तक पहूँचाना ही पत्र-कला है । पहले पत्रकारिता का तात्पर्य समाचारों का संकलन तथा प्रसारण था । परन्तु जैसे-जैसे समाचार पत्रों में प्रेषण, मुद्रण, वितरण के साधनों में वैज्ञानिक, प्राविधिक और शिल्पगत उन्नति होती गयी, पत्रकारिता का क्षेत्र विस्तृत होता गया ।

● **प्रस्तावना :-**

मानव जिज्ञासाशील प्राणी है । वह अपने पडोसी तथा गांव-शहर की हलचलों में बहुत दिलचस्पी लेता है, फिर उसके बाद वह अपने देश तथा विश्व के सन्दर्भ में अवगत होता है । अतः वह समाचार पत्र पढना चाहता है । यह दूसरी बात है कि प्रत्येक की वर्तमान समय में उसके जानने की इच्छा मात्र अपने समाज, राज्य या देश तक सीमित न होकर विश्व के समस्त अतिविधियों तक बढ गई हैं । इसलिए समाचार पत्र को लोकतन्त्र की चौथी शक्ति कहा है और यह सच भी है । आज हमारे प्रत्येक दिन का प्रारंभ चाय से भी पहले समाचार पत्र से होता है । किसी भी समाज और राष्ट्र के जीवन में इसका ऊँचा स्थान है । वह मानवीय सभ्यता, संस्कृति तथा शील का प्रतीक हुआ है । साहित्य तथ ज्ञान की अन्य विधा के समान भारत में पत्रकारिता पाश्चात्य की देन है ।

● **हिन्दी पत्रकारिता :-**

पत्रकारिता जनभावना क अभिव्यक्ति, सद्भावों और उद्भति और नैतिकता की पीठिका है । नेपोलियन का कथन है कि - पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करनेवाले शिकायतखोर, टीकाकार, सलाहकार बादशाहों के प्रतिनिधि और राष्ट्र के शिक्षक होते हैं, जो सर्वथा सत्य है । चार विरोधी पत्र चार हजार संगीतों से भी अधिक खतरनाक है ।

भारत में हिन्दी पत्रकारिता 30 मई सन् 1826 ई. का दिन हिन्दी पत्रकारिता की विकास यात्रा का महत्त्वपूर्ण बिन्दु है, क्योंकि इसी दिन कानपुर निवासी श्री. युगार किशोर शुक्ल के सम्पादन में 'उदन्त मार्तण्ड' नामक पहला साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया गया था । 'उदन्त मार्तण्ड' का शाब्दिक अर्थ है - "समाचार सूर्य"। इस पत्र का मूल उद्देश्य भारतवासियों में राष्ट्र प्रेम और सर्वांगीण विकास हेतु जागृति का भाव पैदा करना था । हिन्दुस्थानियों की भलाई के लिए तथा उन्हें परावलम्बन से मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करने के निमित्त प्रकाशित 'उदन्त मार्तण्ड' का बहुत बडा योगदान रहा है ।

किसी भी राष्ट्र की आजादी एवं उसकी अखण्डता, प्रभुसत्ता तथा सार्वभौमिकता को बनाये रखने की पहली शर्त है - विचार अभिव्यक्ति और स्वतंत्रता । चाहे वह फ्रान्स की राज्यक्रान्ति हो या रूस की बोल्शेविक क्रान्ति हो या भारत की आजादी की लढाई । सभी में लेखकों, विचारकों, पत्रकारों तथा साहित्यकारों ने अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह किया है । देश की चेतना को संचार करने तथा जड और मृतप्राय भावनाओं में क्रान्ति-बीज अंकुरित करने मे पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता ।

वैचारिक तथा साहित्यिक पत्रकारिता अत्यंत रोचक क्षेत्र है । इस क्षेत्र में होनेवाली गतिविधियाँ, नये प्रकाशन, आलोचना संक्रमण, रेखाचित्र, साहित्यकारों से भेट वार्ता आदि को पत्रकारिता द्वारा भी जन-जन तक पहुँचाकर समाज को नई दृष्टि प्रदान की जा रही है ।

साहित्यकार और पत्रकार दोनों क्रान्ति के जनक होते हैं । दोनों काम सदैव क्रान्तिदर्शी रहा है । दोनों ने सामाजिक परिवर्तन में सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका का वहन किया है । दोनों के लेखन का स्तर उग्र होकर बदल जाता है । ऐसे समय वह अपने कर्तव्य का वहन करते है, वे अपनी लेखनी के द्वारा जुल्म का विरोध करते रहते हैं ।

हिन्दी पत्रकारिता का जन्म राष्ट्रीयता के उन्मेश में हुआ । आजादी से पहले

पूरे भारतीयों में एक साथ राष्ट्र प्रेम निर्माण करने के लिए प्रयासरत थीं । स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी पत्रकारिता ने मिशन के रूप में काम किया । इन दिनों पत्रकारिता के सामने कई चुनौतियाँ थीं । एक तो सरकार विदेशी थी और दूसरी बात यह है कि जनसामान्य तक सूचना पहुँचाने के लिए साधनों का अभाव था । इसके बावजूद हिन्दी पत्रकारिता ने देशवासियों में जागरूकता निर्माण करने का प्रयास किया । राष्ट्रीय जागरण के इस दौर में पत्रकारिता के सामने एकमात्र उद्देश्य था - देश की आजादी । जनकल्याण को प्राथमिकता देते हुए सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक स्थितियों के चित्र पत्रकारिता ने उतारे । समाज को जगाने के लिए, उनमें संघर्षशीलता निर्माण करने के लिए उसे एक विचार देना जरूरी था और वह है राष्ट्रीयता । इसी कारण व्यक्तिगत आचरण से पत्रकारिता ने ऊँचे आदर्शों की स्थापना की । देश की आजादी के लिए, राष्ट्रीय सम्मान के लिए उस काल के पत्रकारिता ने बहुत अधिक कष्ट और यातनाओं को सहा । आजादी के आन्दोलनों के दौरान भारतीय पत्रकारों ने अपने अपूर्व त्याग, समर्पण भावना और बलिदान का परिचय दिया । इस काल की पत्रकारिता ने अपने युगीन दायित्व को सक्षमता के साथ निभाया ।

आज पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम बन गया है । आज के वैज्ञानिक युग में पत्रकारिता का महत्त्व दिन-ब-दिन बढता जा रहा है । यह हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य घटित होनेवाली नई-नई घटनाओं को शीघ्रता के साथ दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाती है । आज पत्रकारिता का क्षेत्र विशाल हो गया है ।

प्राचीन काल से कागज के टुकडे पर समाचार लिखकर भेजना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति रही हैं । एक व्यक्ति दूसरों का हाल-चाल जानने तथा अपना हाल-चाल कागज के टुकडों पर लिखकर भेजता रहा है, यह प्रक्रिया आज भी चल रही है । मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासुवृत्ति का होने के कारण वह आस-पास घटने-वाली घटनाओं को जानने के लिए सदा उत्सुक रहता है । वर्तमान समय में उसके जानने की इच्छा मात्र अपने समाज, राज्य या देश तक सीमित न होकर विश्व के समस्त गतिविधियों तक बढ गयी है । पत्रकारिता के द्वारा ही उसकी इच्छाओं की पूर्ति सुगमता पूर्वक होती है । पत्रकारिता हमें हमारे समाज, देश की समस्याओं तथा विचारों से ही रूबरू नहीं करती बल्कि सम्पूर्ण विश्वभर की घटनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत कराती है ।

स्वतंत्रता पूर्व युग की पत्रकारिता के प्रारंभिक चरण में साहित्यकार ही पत्रकार हुआ करते थें । इस युग का यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि प्रारंभिक चरण के अधिकतर साहित्यकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पत्रकारिता के साथ जुडे हुए थे । इनमें सर्व प्रथम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का नाम आता है । बाद में पं. बालकृष्ण भट्ट, बाबू विष्णु पराडकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, बद्रीनारायण चौधरी, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी, जयशंकर प्रसाद, माखनलाल चतुर्वेदी, धर्मवीर भारती आदि । शायद यही कारण होगा कि इस युग की पत्रकारिता ने पूरे भारतीयों को स्वतंत्रता का विचार दिया । इन्होंने अपनी प्रतिभा, पैसा और श्रम पत्रकारिता में लगा दिया । देश की स्वतंत्रता के लिए जन-जागरण पर बल देते हुए सामाजिक विद्रुपताओं के भी चित्र उतारे । कई सामाजिक विषयों पर लेख लिखकर अपने दायित्व को निभाया, उन्होंने पत्रकारिता के दीप को सदैव जलाये रखने की कोशिश की । इसलिए बनार्ड शॉ ने कहा है - "कुशल पत्रकार, साहित्यकार से भिन्न नहीं है ।" गलत और घातक प्रथाओं, जातीय, धार्मिक ढकोसले, साम्प्रदायिकता, विषमता जैसे विषयों पर पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे । अर्थात् "हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रीयता की कोख में पली, सामाजिक - धार्मिक रूठियों, आडम्बरों के खिलाफ लडती रही । ध्येय की दृष्टि से लोकहित, लोक-कल्याण उसका प्रमुख लक्ष्य रहा । वह जनता को शिक्षित करने का सर्वसुलभ और सशक्त माध्यम बनी । राष्ट्रीयता की ओजस्विता, सामाजिक सुधार, धार्मिक आडम्बरों के विरोध में लोकजीवन का पैना हथियार बनी ।"[1] तात्पर्य यह है कि आजादी से पहले जिस पत्रकारिता ने समाज में जागरण का बुनियादी काम किया, उसके पीछे एक विचार था । पत्रकारिता की एक दृष्टि थीं, एक सोच थी । स्वतंत्रता पूर्व काल में हिन्दी पत्रकारिता संघर्ष की स्थिति से गुजरी है, लेकिन उसने कभी अपने सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया । हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता के विकास की कहानी है । दोनों की विकास भूमियाँ एक-दूसरे के लिए पूरक साबित हुई है । जहाँ एक और हिन्दी पत्रकारिता ने राष्ट्रीयता की बुनियाद रखी वहाँ राष्ट्रीयता ने हिन्दी पत्रकारिता को प्रेरणा प्रदान की ।

हिन्दी पत्रकारिता ने समाज सुधार और स्वतंत्रता संघर्ष के लिए हथियार के रूप में काम किया । भारतीयों के कल्याण हेतु और उन्हें पराधीनता से मुक्ति दिलाने के लिए तथा उन्हें स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करने के लिए मौलिक विचार दिया । प्रगतिशील विचारों के माध्यम से जनमानस में नई शक्ति का निर्माण किया । हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी निष्काम और कर्मठ साधना द्वारा स्वतंत्र होने की प्रबल लालसा निर्माण की । गुलामी की मानसिकता से गुजरने वाले भारतीयों में आशा की नयी किरन जगाई । "राष्ट्रीय आंदोलन के समय पत्रकारिता के क्षेत्र में गांधीजी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा । उन्होंने 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' के माध्यम से अपने अहिंसक क्रान्तिकारी विचारों का प्रचार किया । सरकार को अपने राजनैतिक विचारों व कार्यक्रमों से अवगत कराया और आम जनता को एक बडे आन्दोलन के प्रति जागृत करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया । अपने पत्रों में निर्भीकता व निष्पक्षता से अपने विचार व्यक्त करके गांधीजी ने अन्य पत्रकार सेनानियों को भी निर्भीकता-पूर्वक अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया ।"[2] पराधीनता के इस दौर में हर पत्रकार एक वीरयोद्धा हुआ करता था और उसका विचार एक बहुत बडा हथियार ।

हिन्दी पत्रकारिता के विकास में वैचारिक पत्रकारिता के संदर्भ में पं. बाबूराव पराडकर और गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम बडे सम्मान के साथ लिया जाता है । अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष में इन जैसे कई पत्रकारों का विशेष योगदान रहा है । स्वतंत्रता से पूर्व पत्र-पत्रिकाओं का स्वरूप एक मिशन जैसा था । इसमें काम करनेवाले पत्रकार पूरी निष्ठा के साथ अपने दायित्व का निर्वाहन करते थें । हमारे पत्रकार और उनकी पत्रकारिता का इतिहास पराधीनता से स्वाधीनता की और अग्रसर होने का एक लम्बा संघर्ष है । ध्येय निष्ठा से प्रेरित होकर युग की पत्र-पत्रिकाओं ने तथा पत्रकारों ने त्याग और बलिदान की भावना का उच्च विचार स्थापित किया । इस युग की पत्रकारिता में तनिक भी व्यावसायिकता नजर नहीं आती । स्वतंत्रता के बाद की पत्रकारिता में धीरे-धीरे व्यावसायिकता ने प्रवेश किया । विशेष कर औद्योगिकीकरण के साथ पत्रकारिता मं व्यावसायिकता आ गयी । स्वतंत्रता के बाद और औद्योगिकीकरण से पहले पत्रकारिता अपनी उच्च परम्परा को कायम करते हुए अपना दायित्व निभा रही थीं । आम जनता को बल, ज्ञान और उत्साह प्रदान करना उसके व्यक्तित्व और चरित्र का निर्माण करना, अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ आवाज उठाना, आगे बढने के लिए समाज को एक विचार देना और जनता के जीवन में आनंद निर्माण करना आदि भावनाओं को लेकर पत्रकारिता कार्यरत है । अर्थात् पत्रकारिता की रचनात्मक प्रतिभा ने भारत के निर्माण की दृष्टि से काफी प्रयास किया । एक नवीन भारत का निर्माण करने के लिए और उसे बलशाली बनाने के लिए पत्रकारिता ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है । नवीन भारत की तस्वीर बनाने में उसका काफी योगदान रहा है । देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों के चित्र उतार कर इन क्षेत्रों की समस्याओं का निराकरण करने हेतु विचार प्रस्तुत किए । पत्रकारिता ने ग्रामीण क्षेत्रीय, प्रांतीय और राष्ट्रीय विकास के साथ-साथ मानवीय मूल्यों के निर्माण मे बहुमूल्य योगदान दिया ।

"वस्तुत: किसी समाज व राष्ट्र का उत्थान-पतन इन मूल्यों के संगठन एवं ऱ्हास पर ही निर्भर करता है । इसलिए समाज, राष्ट्र, विश्व अथवा व्यक्ति के जीवन का विश्लेषण करते समय विज्ञजन उनकी मूल्यनिष्ठा को ही केंद्रक मानकर चलते हैं । जीवन-मूल्य, सामाजिक मूल्य, राष्ट्रीय मूल्य, विश्व मूल्य जैसे शब्दों की उत्पत्ति उसी के विकसित संदर्भों में हुई है । पत्रकारिता भी मूल्यों के अभाव में बंजर और बाँझ साबित हुई है, जब कि पत्रकारिता की मूल्यनिष्ठा समाज-परिवर्तन की दिशा तय करती है ।"[3] इसी समाज परिवर्तन की दिशा में आजादी के बाद हिन्दी पत्रकारिता ने अपनी दिशा निश्चित की । जीवन के हर क्षेत्र में स्वतंत्रता स्थापित करने के लिए पत्रकारिता को पारंपारिक साम्राज्यवादी मान्यताओं के विरूद्ध पुन: संघर्ष करना पडा । समाज से हजर प्रकार की विषमता नष्ट करने के लिए लेखनी उठानी पडी ।

किसी देश की स्वतंत्रता उस समय सार्थक साबित होती है, जब देश का हर एक नागरीक आत्मनिर्भर हो । आत्मनिर्भर मनुष्य वह होता है जो अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए किसी पर निर्भर नहीं होता । जिस देश का प्रत्येक नागरीक आत्मनिर्भर होगा, तो हम कह सकते हैं कि देश का सर्वांगीण विकास हो गया है । इस देश में कल्याणकारी राज्य की प्रतिष्ठा हुई है । हिन्दी पत्रकारिता ने इस दृष्टि से काफी प्रयास किए । और-तो-और राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण में उसने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है ।

आजादी के पश्चात औद्योगिकीकरण के साथ जीवन के हर क्षेत्र में व्यावसायिकता ने प्रवेश किया । हर क्षेत्र में लाभ-हानि को लेकर विचार होने लगा । पत्रकारिता का क्षेत्र भी इस स्थिति का शिकार हुआ और वह अपने आपको दूर नहीं रख सका । पाश्चात्य संस्कृति और औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव में 'मिशन' से प्रारंभ हुई उसकी यात्रा 'प्रोफेशन' अर्थात् व्यवसाय के रूप में बदलने लगी । पत्रकारिता के मानदण्ड बदल गए । इसमें नए युग की सभी नई प्रवृत्तियों का समावेश होने लगा और वह आगे चलकर बहुत बडे व्यवसाय का रूप धारण कर गई । उसके संचालन में लाखों रूपयों की पूँजी लगाई जाने लगी । जो उसमें पूँजी लगता है, वही उसका मालिक बन जाता है । एक उत्पादन की तरह आज उसे बनाया, सजाया, सँवारा जा रहा हैं । ऐसी ही पत्रकारिता बाजार पर कब्जा कर रही है । "आज व्यावसायिक पूँजी ने समाचार पत्रों पर एकाधिकार-सा कर लिया है । किसी समय मानवीय कल्याण तथा अर्थतंत्र ने उसकी स्थिति को इतना दयनीय बना दिया है कि आज पत्रकार उनका खिदमतगार बनकर रह गया है ।"[4] अर्थात् पत्र-संचलन जब से व्यवसाय बन गया है तब से वह धन कमाने का साधन बन गया । पूँजीपति मालिक बन गए । संपादक तथा पत्रकार उनके इशारे पर काम करने लगे । परिणामस्वरूप उसमें धीरे-धीरे वैचारिकता कम होने लगी । सबकी खबर रखनेवाली पत्रकारिता एक विशिष्ट वर्ग की खबर रखने लगी । व्यावसायिक पत्रकारिताने वैचारिक पत्रकारिता को पछाड दिया ।

व्यावसायिक दृष्टिकोण के कारण पत्रकारिताने नई आर्थिक व्यवस्था का स्वीकार किया । भूमण्डलीकरण के कारण देश की अर्थनीति में परिवर्तन हुआ । इसमें खुलकर व्यापारवाद आ गया । पत्रकारिता की विज्ञापन नीति में भी परिवर्तन हुआ । अधिकतर समाचारों का स्थान विज्ञापन ने ले लिया । एक समय था जब संपादकीय, विशेष रूप से अग्रलेख मुखपृष्ठ पर छपते थें, हमें पता भी नहीं चला कि वे बीचवाले पृष्ठ पर कब चले गऐ । आज पैसा कमाने के लिए पूरे मुखपृष्ठ पर विज्ञापन प्रकाशित किए जा रहे हैं । व्यावसायिकता के इस दौर में पत्रकारिता में भी ठेकेदारी प्रणाली का विकास हुआ है । पत्रकारों के सिर पर हमेशा संघर्ष की तलवार लटकती रहती है । इस बात का सीधा प्रभाव पत्रकारों के काम पर होता है । वे पत्रकार वही लिख रहे हैं, जो पत्र का मालिक लिखवाना चाहता है ।

देश के बाजारवाद ने पत्रकारिता के रूप-स्वरूप को ही बदल डाला । 'जैसी माँग वैसी आपूर्ति' यह बाजार का तत्व है । बाजार में जो बिकता है, वही समाचार पत्रों में प्रकाशित होने लगा । अपने समाचार पत्र की बिक्री संख्या बढाने के लिए इनके बीच 'प्राईस वॉर' चलता है । अन्य समाचार पत्रों की बिक्री संख्या या ग्राहक संख्या के साथ तुलना कर हम औरों की तुलना में सबसे आगे है । यह दिखाने का प्रयास किया जाता है । कई समाचार पत्र तो अपने ग्राहकों को 'पॅकेज' दे रहे हैं । पुरस्कार, विदेश की सैर जैसे प्रलोभन देकर लोगों की मानसिकता का लाभ उठा रहे हैं । ये सारी स्थितियाँ पत्रकारिता में व्यावसायिकता के कारण ही आ गयी है । इन तमाम चीजों के बावजूद आज भी कई पत्र और पत्रकार ऐसे हैं जिन्होंने पूरी निष्ठा के साथ अपना दायित्व निभाया है । आज भी वह समाज के लिए यह मिशन चला रहे हैं । उन्होंने समाज से अपना रिश्ता नहीं तोडा है । व्यावसायिकता के इस दौर में भी वह पत्रकारिता के पारंपारिक मूल्यों की रक्षा करने में जुटा हुआ है । कुछ पत्रकार ऐसे भी है जिन्होंने व्यावसायिक नैतिकता का पालन करते हुए समाज हित में ही अपनी लेखनी उठाई है ।

● निष्कर्ष :-

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आज हिन्दी पत्रकारिता में व्यावसायिकता आ गई है । इसमें कोई शक नहीं है । लेकिन वह व्यावसायिक होते हुए भी अपनी मर्यादाओं का ध्यान रखकर सामाजिक दायित्व के प्रति सचेत है । हिन्दी पत्रकारिता व्यावसायिकता के बावजूद भी उसमें आम आदमी, समाज तथा राष्ट्र से अपना नाता नहीं तोडा है । आम जनता के पक्ष में बात कर समाज को आगे बढाते हुए वह राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है । हिन्दी पत्रकारिता को राष्ट्रीयता की जो विरासत मिली है, उसे आज भी उसने कायम रखा है । यदि ऐसा कहा जाय तो गलत नहीं होगा कि आज अन्य क्षेत्रों की तुलना में ईमानारी, सच्चाई समर्पण त्याग व बलिदान की भावना कहीं दिखाई देती है तो वह मात्र पत्र और पत्रकारों में है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) डॉ. अंबादास देशमुख - 'प्रयोजन मूलक हिन्दी अधुनातम आयाम', शैलजा प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण 2006, पृष्ठ 226, 247 ।
2) विनोद गोदरे - 'हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008, पृष्ठ 36 ।
3) डॉ. बापूराव देसाई - 'प्रयोजन मूलक हिन्दी व्याकरण एवं पत्रलेखन', विनय प्रकाशन, कानपुर, द्वितीय संस्करण 1999, पृष्ठ 77, 79, 80 ।
4) विनोद गोदरे - 'हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ', वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2008, पृष्ठ 56 ।